



भारत सरकार

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय

प्रौद्योगिकी विकास और प्रसार हेतु ज्ञान तक पहुँच (ए2के+) अध्ययन

प्रस्तावों के लिए आमंत्रण

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) पृथक वैधानिक अस्तित्व वाले सार्वजनिक निधीयत निकायों अथवा संस्थानों यथा - अनुसंधान तथा प्रबंधन में उच्चतर शिक्षा संस्थानों, अनुसंधान तथा विकास संस्थानों, उद्योग संघों, वाणिज्य तथा उद्योग मंडलों, तकनीकी परामर्श संगठनों, आदि से प्रौद्योगिकी विकास और प्रसार हेतु ज्ञान तक पहुँच (ए2के+) अध्ययन कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रस्ताव आमंत्रित करता है।

ए2के+ अध्ययन कार्यक्रम का उद्देश्य उपयोगी जानकारी तथा ज्ञान आधार प्रदान करने के उद्देश्य से, प्रौद्योगिकी के उभरते क्षेत्रों में उद्योग, उद्योग संघों, शिक्षा संस्थानों, अनुसंधान संस्थानों, परामर्शदाताओं, उद्यमियों, अनुसंधान-कर्ता विद्यार्थियों तथा नीति-निर्माताओं को इन क्षेत्रों में आगे किसी तरह का कार्य करने में सहायता प्रदान करना है : उभरते प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में विकासों का अध्ययन तथा विश्लेषण करना और निष्कर्षों, अधिगमों तथा परिणामों को व्यापक प्रसार के लिए अभिलेखबद्ध करना; तथा सार्वजनिक निधीयत संस्थानों से ऐसी प्रौद्योगिकियों पर स्थिति रिपोर्ट तैयार करना जो वाणिज्यीकरण के लिए तैयार हों जिससे अनुसंधान परिणामों का अंतरण संस्थानों से बाजार की ओर करने को बल मिले।

अध्ययन के लिए प्रस्ताव निम्नलिखित विषयों पर आमंत्रित हैं-

- व्यापार आंकड़ा विश्लेषण में एआई का उपयोग
- निर्यात संवर्धन के लिए नए तथा उभरते प्रौद्योगिकी क्षेत्रों का पूर्वानुमान
- वितरण ट्रांसफॉर्मों के अधिक विफलता वाले विनिर्दिष्ट क्षेत्रों का अध्ययन करना ताकि विफलता के कारण का विश्लेषण किया जा सके और सूचना प्रौद्योगिकी को अपनाकर एवं इसे मापक समाधानों के साथ समन्वित करके इस समस्या से उबरने के लिए समाधान का सुझाव देना
- शुष्क मृदा स्थितियों के लिए सिंगल फेज ट्रांसफॉर्मर हेतु सर्वोत्तम अर्थिन्ग समाधान
- घर पर पानी साफ करने के लिए तथा गैर पेयजल, बाह्य प्रयोगों हेतु पुनः उपयोग के लिए घर में प्रयुक्त जल परिमार्जन प्रौद्योगिकियाँ/तकनीकें
- कोविड-19 के बाद, सेंट्रल यूनिट कन्डीशनिंग यूनिटों में वायु संचार के लिए फिल्टर टेक्नोलोजी
- पीवीसी अपशिष्ट, शहरी अपशिष्ट, सी एंड डी अपशिष्ट, हॉस्पिटल अपशिष्ट, ई-वेस्ट, आदि जैसे कृषि-उद्योग अपशिष्ट का उपयोग करके नई निर्माण सामग्री का विकास
- शहरी क्षेत्रों में जल आपूर्ति नेटवर्क में जल क्षति का पता लगाने के लिए किफ़ायती प्रौद्योगिकी/उपकरण का विकास
- व्यस्त शहरी क्षेत्रों में ओपन कट ट्रेचेस के बिना तथा जनता को कम से कम असुविधा वाली सीवर बिछाने के लिए ट्रेचेस टेक्नोलोजी
- स्मार्ट वेस्ट मैनेजमेंट - आवासीय भवनों में सेन्सर बेस्ड बिन्स, कचरा-दानों के जरिए सेन्सर बेस्ड ऑटोमेटिक वेस्ट कलेक्शन सिस्टम जैसे अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों के लिए किफ़ायती प्रौद्योगिकी/तकनीकों का विकास
- फार्मों की नवाचार तत्परता, अनुसंधान गहनता, तथा प्रौद्योगिकी लचीलापन को आँकने के लिए ढांचे का विकास
- भविष्य में उद्योग के लिए नए प्रौद्योगिकी संवर्धन के रूप में उन्नत सामग्रियों पर प्रौद्योगिकी दूरदर्शिता अध्ययन
- संधारणीय भविष्य के लिए उन्नत विनिर्माण प्रौद्योगिकियों पर प्रौद्योगिकी दूरदर्शिता अध्ययन
- उद्योगों की कोविड 19 रणनीति के लिए अपने हिस्से के रूप में विकाशशील एवं लाभकारी उभरती प्रौद्योगिकियाँ
- एआई तथा एमएल जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए संगठनों की तत्परता एवं रुचि
- संधारणीय डिज़ाइन एवं समग्रियाँ
- अधिगम मॉडलों में एआई, एआर तथा वीआर का समन्वय और उनकी प्रभावशीलता
- ड्रेजिंग सामग्री का पुनःचक्रण

आवेदन प्रस्तुत किया जाना : निर्धारित आवेदन प्रारूप <http://dsir.gov.in/#files/12plan/a2k/a2ks.html> वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है। आवेदकों को प्रस्ताव की विधिवत हस्ताक्षरित पाँच हार्ड प्रतियाँ, पेन ड्राइव के साथ डॉ. सुजाता चकलानोबिस, प्रमुख (ए2के+), वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, टेक्नोलोजी भवन, नया महरौली रोड, नई दिल्ली-110016 को भिजवाना चाहिए। लिफाफे पर स्पष्टतः "CONFIDENTIAL, A2K+Studies" लिखा जाए। साथ ही, एक सॉफ्ट प्रति (एमएस वर्ड फाइल, न कि पीडीएफ फाइल) ई-मेल से priya@nic.in पर भी भेजी जाए।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

डॉ. विपिन सी. शुक्ल, वैज्ञानिक 'एफ'

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग,

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय,

टेक्नोलोजी भवन, नया महरौली रोड, नई दिल्ली-110016

ई-मेल : vipin.shukla@gov.in, फोन : 011-26590463

प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाने की अंतिम तिथि : 20/10/2020